शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

दीन दयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गांधी जी के शैक्षिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन

डॉ० नरेश चन्द्र श्रीवास्तव

विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त), शिक्षक-प्रशिक्षण विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सेंगरामऊ, जौनपुर

www.shodh.net

दीन दयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गांधी जी के शैक्षिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन

शोध का कार्य शिक्षा को दिशा एवं गति प्रदान करता है, साथ ही समाज को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष ढंग से लाभान्वित करता है। वर्तमान परिदृश्य में शोध कार्यों की गुणवत्ता घटी है। साधन- सुलभता एवं तकनीकि विकास के इस दौर में शोध कार्यों में मात्रात्मक वृद्धि तो बहुत हुई किन्तु जिस स्तर की गुणात्मक वृद्धि होनी चाहिए थी वह नहीं हुई। ऐसे वातावरण में किसी शोध कार्य/प्रबंध की समीक्षा करना एक दुष्कर कार्य प्रतीत होता है।

शोधार्थी धीरज सिंह द्वारा चयनित शोध विषय-''दीन दयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गाँधी जी के शैक्षिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन'' पूर्णतया भिन्न है। शोधार्थी ने बिल्कुल नवीन, सामयिक एवं साहसिक विषय का चयन किया है।

हमारे देश में इस समय 10 लाख से भी अधिक स्वयंसेवी संगठन (NGO) सक्रिय हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकार की भूमिकाओं में संलग्न हैं। ऐसी स्थिति में किसी एक NGO के द्वारा किये जा रहे शैक्षिक कार्यों को शोध का विषय बनाना शोधार्थी के साहस एवं स्वयंसेवी संगठनों के प्रति जागरूकता का परिचायक है। कभी किसी के मन में इस विषय की सार्थकता के प्रति शंका उत्पन्न हो सकती है। लेकिन इस संगठन की पृष्ठभूमि, प्रभावपूर्ण कार्य नियोजन एवं उपलब्धियों को यदि ध्यान में रखा जाये तो इस प्रकार की शंका स्वतः समाप्त हो जाती है। शोध का उद्देश्य किसी तथ्य/सत्य/कार्य/सिद्धांत/प्रक्रिया का शोध करना या प्रकाश में लाना होता है। शोधार्थी ने शोध के इस बिन्दु को ध्यान में रखा है एवं संस्थान के द्वारा किये जा रहे महत्त्वपूर्ण शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यों को प्रकाश में लाने का सफल प्रयास किया है।

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध कार्य को 6 अध्यायों में विभक्त किया है। प्रथम अध्याय भूमिका है जिसके अंतर्गत शोध समस्या की पृष्ठभूमि, औचित्य एवं महत्त्व, शोध समस्या का उद्देश्य, सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण, शोध शीर्षक, शोधविधि तथा शोध हेतु अध्ययन क्षेत्र एवं सीमायें आदि विभिन्न बिन्दुओं को शामिल किया है। द्वितीय अध्याय में शिक्षा एवं दर्शन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए गाँधी जी के शैक्षिक दर्शन पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में गाँधीजी के शैक्षिक विचारों के समस्त बिन्दुओं पर सुव्यवस्थित ढंग से विचार प्रस्तुत किया गया है। भारत गाँवों का देश है जहाँ की लगभग 70% आबादी गाँवों में निवास करती है। शोधार्थी ने गाँधी जी के ग्राम विकास द्वारा राष्ट्र विकास की संकल्पना सम्बंधी विचारों को भी इस अध्याय में सम्मिलित किया है। तीसरे अध्याय ''दीन दयाल शोध संस्थान-एक परिचय'' में शोधार्थी ने सर्वप्रथम यशःशेष, महान विचारक, दार्शनिक, अर्थवेत्ता, समाज सुधारक, कुशल संगठनकर्ता एवं राजनीतिज्ञ पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया है। साथ ही शोधार्थी ने संस्थान के संस्थापक, नेतृत्त्वकर्ता एवं प्रेरणास्रोत नानाजी देशमुख के व्यक्तित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला है। इसमें शोधार्थी ने संस्थान की स्थापना, उद्देश्य, संकल्प एवं गुणात्मक नीति, लक्ष्य तथा देश के विभिन्न भागों में स्थापित इनके विभिन्न प्रकल्पों का परिचय आदि विभिन्न तथ्यों को प्रस्तुत किया है। चतुर्थ अध्याय में संस्थान के चित्रकूट प्रकल्प, जो कि संस्थान का मुख्य कार्य स्थल है, के द्वारा संचालित विभिन्न स्कूल-कालेजों की कार्यप्रणाली एवं विशिष्टताओं पर प्रकाश डाला है। साथ ही संस्थान द्वारा समाज के लिए किये जा रहे स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, कृषि एवं सदाचार संबंधित कार्यों पर शोधार्थी द्वारा समुचित ढंग से प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

पंचम् अध्याय में शोधार्थी ने संस्थान के मुख्य कार्यस्थल चित्रकूट के अतिरिक्त देश के सात अलग-2 स्थलों पर स्थित प्रकल्पों द्वारा किये जा रहे विभिन्न शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यों पर चर्चा की है। छठें अध्याय उपसंहार में संस्थान द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों का मूल्यांकन, निष्कर्ष तथा सुझाव को शामिल किया है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

दीन दयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गांधी जी के शैक्षिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन

डॉ० नरेश चन्द्र श्रीवास्तव

विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त), शिक्षक-प्रशिक्षण विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सेंगरामऊ, जौनपुर

www.shodh.net

शोधार्थी ने गाँधीजी की ग्रामविकास द्वारा राष्ट्रविकास की संकल्पना को आधार मानते हुए दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा किये जा रहे कार्यों का तुलनात्मक ढंग से अध्ययन करने का सफल प्रयास किया है। दीनदयाल शोध संस्थान देश के अति पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, सदाचार आदि बिन्दुओं के प्रसार द्वारा युगानुकूल सामाजिक पुनर्रचना हेतु सतत् प्रयत्नशील है। संस्थान मध्य प्रदेश के सतना जिला एवं उत्तर प्रदेश के बाँदा तथा चित्रकूट जिलों, जो कि सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से अति पिछड़े हैं, में पं0 दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म-मानववाद दर्शन के आधार पर युगानुकूल सामाजिक पुनर्रचना कार्यक्रम को साकार रूप देने में सतत् प्रयासरत् है। सन् 2005 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ0 ए0पी0जे0 कलाम ने आई0एस0ओ0 प्रमाणित देश के प्रथम NGO द्वारा गोद लिए पटनी ग्राम का निरीक्षण किया था एवं संस्थान के कार्यों की भूरि-भूरि प्रसंशा करते हुए इसे राष्ट्र के लिए अनुकरणीय उदाहरण बताया था। देश को इस समय ऐसे ही स्वंयसेवी संगठनों की आवश्यकता है जो स्वार्थलिप्सा के भाव से ऊपर राष्ट्र एवं समाज की सेवा में सक्रिय भागीदारी अदाकर सकें। जो कार्य शासन-प्रशासन करोड़ों रूपये खर्च करके नहीं कर पा रहा है, उन कार्यों को यह संस्थान अपने सीमित संसाधनों एवं सामुदायिक प्रयास द्वारा सफलतापूर्वक कर रहा है। शोधार्थी ने ऐसे NGO के कार्यों को अपने शोधकार्य के माध्यम से प्रकाश में लाने का सराहनीय कार्य किया है। शोध प्रबंध का टंकण कार्य त्रुटिमुक्त है साथ ही बाइडिंग एवं आंतरिक व वाह्य साज-सज्जा प्रशंसनीय है। शोधार्थी द्वारा दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट के जनवरी 2010 तक के लिए निर्धारित लक्ष्य किस सीमा तक प्राप्त हुए, इस पर प्रकाश डालना, शोध की गुणवत्ता में और वृद्धि करता है।

निष्कर्षत: शोधार्थी धीरज सिंह द्वारा किया गया यह शोध कार्य अतिनवीन, सामयिक, प्रशंसनीय एवं महत्त्वपूर्ण है। यह कार्य दूसरे NGO's को एक दिशा-निर्देश प्रदान करेगा एवं उन्हें अपनी कार्य प्रणाली, प्रसंगिकता एवं उपादेयता के विषय में विश्लेषण/आत्ममंथन करने हेतु प्रेरित करेगा। यह शोधकार्य सरकार/NGO's के सन्दर्भ में नीति निर्धारित करने में महत्त्वपूर्ण हो सकता है। आगे आने वाले समय में यह शोध कार्य विभिन्न विषयों के अन्य शोधार्थियों को NGO's की विभिन्न भूमिकाओं के संदर्भ में नवीन शोध समस्यायें एवं ठोस आधार प्रदान करेगा।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN